basti balrampur_page 1 25/11/2024 11:54 PM Page 1

जिस एहतसाम के साथी दो-दो सांसद हो, क्या पुलिस उसे छू पाएगी?

- -जिस तरह डा. डीके गुप्त और एहतसाम के मामले में दो-दो सांसदों ने क्राइम करने वाले का साथ दिया, उससे पता चलता है, अपराधी क्यों बच जातें?
- -एहतसाम जैसे अपराध करने वालों का साथ देकर दोनों सांसदों ने अपराध और अपराधियों दोनों को बढ़ावा दिया
- -इनमें एक सांसद पर अपराधियों और भ्रष्टाचारियों को सरंक्षण देने तक आरोप लगता रहा, भ्रष्टाचारियों को बचाने और षिकायत करने का भी यह मेहनताना लेने के लिए जाने जाते
- -इस सबके बावजूद अगर डा. डीके गुप्त एफआईआर के लिए अडिग रहते तो केस दर्ज होने से कोई रोक नहीं सकता

बस्ती।...नेताओं का अपराधियों, माफियाओं और भ्रष्टाचारियों का गठजोड़ कोई नया नहीं बल्कि काफी पुराना हैं। यह गठजोड़ कमजोर होने के बजाए दिनों-दिन 'फेबिकोल' की जोड़ की तरह और मजबूत होता जा रहा है। जब भी कोई अपराधी और भ्रष्टाचारी कहीं फंसता है, तो वह वकील के पास जाने के बजाए सीधे अपने आका के पास पहुंचता है, ताकि वह बचा सकें। यह अपने आका के पास इस लिए पहले पहुंचता है, क्यों कि वह दोनों साथ में लंच और डिनर जो करते है। कहना गलत नहीं होगा कि अपराधी, भ्रष्टाचारी और खनन माफिया गलत कामों से अर्जित किए गए धन में से कुछ हिस्सा अपने आका को बचाने के नाम पर देता है। इतना ही नहीं, यही लोग चुनाव में आकाओं की मदद भी करते है। जैसे ही यह लोग आका के पास पहुंचते हैं, वैसे ही इनके आका त्वरित अधिकारियों को काल करते हैं, और कहते हैं, कि यह हमारा आदमी है, इसे कुछ नहीं होना चाहिए। देखा जाए तो नेता कानून के साथ मजाक करते है। अधिकारी भी ना जाने क्यों नेताओं के दबाव में आ जाते हैं, जब कि वर्तमान समय में यह लोग नेता चाहे तो एक सफाई कर्मी का तबादला भी नहीं करा सकते, फिर भी अधिकारी नेताओं से ना जाने क्यों इतना डरते रहते है। जरा अंदाजा लगाइए कि अगर कोई सांसद या विधायक अपराधियों की सिफारिष करते हुए यह कहे कि अमूक व्यक्ति हमारा आदमी और हमारे परिवार के सदस्य की तरह है, इस लिए उसे खरोच तक नहीं आना चाहिए, तो देष का क्या होगा, उन गरीबों का क्या होगा, जिनका कोई आका नहीं होता। देखा जाए तो ऐसे में हर अपराधी और भ्रष्टाचारी नेताजी का आदमी ही होता है। नेताओं को इस बात का जरा सा मलाल नहीं होता और ना षर्म ही आती कि वह जिसकी सिफारिष करने जा रहे हैं, वह लोग समाज और कानून दोनों के अपराधी है। अपराधियों और भ्रष्टाचारियों की सिफारिष करते समय नेताजी यह तक नहीं सोचते कि जिनकी वह सिफारिष कर रहे हैं, वह उनकी जनता और वोटर्स दोनों का अपराधी है।

इसी तरह का एक मामला हाल ही में चर्चित डा. डीके गुप्त और डाक्टर के परिवार के साथ में क्राइम करने वाले एहतसाम चौधरी का सामने आया। आप लोगों को जानकर हैरानी होगी, कि इसके खिलाफ एफआईआर ना दर्ज हो बल्कि समझौता हो, इसके लिए मंडल के दो सांसदों ने पुलिस के बड़े-बड़े अधिकारी से लेकर छोटे अधिकारी तक पर दबाव बनाया, किसी ने बड़े अधिकारियों को तो किसी ने छोटे अधिकारी को काल किया। ऐसे में पुलिस ने जब यह देखा कि उसकी और विकटिम की एक नहीं चलेगी तो उसने भी बहती गंगा में हाथ धोना ही बेहतर समझा, और जो कुछ हुआ, उसे पूरी दुनिया ने देखा। देखा जाए तो इस मामले में एक भी नेता और पुलिस की नहीं चलती, अगर डा. गुप्त स्टैंड किए होते। उन्हें लगा कि अगर उन्होंने एफआईआर दर्ज कराने पर जोर दिया तो कहीं वही ना फंस जाएं। रही सही कसर पुलिस ने पूरा कर दिया। सिफारिष करने वाले सांसदों में एक सांसद ऐसे भी हैं, जो सिफारिष करने का भी मेहनता वकीलों की तरह वसूलते है। सिफारिषी पत्र लिखने से लेकर सिफारिष कराने तक के मामलों में इन्हें फीस देना होता है, यह सांसदजी कोई काम फ्री में नहीं करते। यह ऐसे सांसद है, जिन्हें हर चीज में अपना लाभ नजर आता है। देखा जाए तो इस एपिसोड में विकटिम, नेताओं और पुलिस तीनों ने अपराध को बढ़ावा दिया, अपराधियों को अपराध करने के लिए उनका मन बढ़ाया। आज भी जिले की जनता एहतसाम चौधरी के षिकार डा. गुप्त को ही दोषी मान रही है। दोषी ही नहीं डरपोक तक की संज्ञा दे रही है। कहती है, कि जिसने कोई अपराध नहीं किया, उसे बदनामी झेलनी पड़ रही है, और जिसने अपराध किया वह सीना तानकर समाज में घूम रहा है, और इसके लिए डा. गुप्त ही जिम्मेदार है। क्यों कि एहतसाम चौधरी लोग ना तो सभ्य समाज और ना सरकार के ही हो सकते है। इस तरह के लोग डा. गुप्त जैसे लोगों को पहले डरा धमका कर उनके साथ क्राइम कर अपने मकसद को पूरा करते हैं, और उसके बाद बचने के लिए अपने आका के पास पहुंच जाते है। डाक्टरी पेषे से जुड़े हुए लोगों का कहना है, कि अगर डाक्टर गुप्त, षुरु में ही आईएमए को साथ में लेकर चलते तो उनकी इतनी फजीहत नहीं होती। डा. गुप्त का आईएमए के लोगों को विष्वास में ना लेना उनकी बड़ी भूल मानी जा रही है।मीडिया जनचर्चा के आधार पर रिपोर्टिगं करती रहेगी।

सीएम से लगाई गन्ना समिति विक्रमजोत को जालसाजों से बचाने की

- -श्रीराम सिंह ने सीएम से, शिवप्रकाश ने प्रमुख सचिव से की शिकायत

बस्ती। पूर्व चेयरमैन अरविंद कुमार सिंह के पुत्र एवं वर्तमान चेयरमैन सिद्वांत कुमार सिंह की जालसाजी की शिकायत पहले आठ नवंबर 24 को सेवरा लाला के शिवप्रकाश ने प्रमुख सचिव गन्ना और उसके बाद 23 नवंबर 24 को पकड़ी बख्तावर के श्रीराम सिंह ने मुख्यमंत्री को किया। दोनों ही शिकायत पत्र में एक ही बात की शिकायत की गई। कहा गया कि 17 अक्टूबर 24 को गन्ना समिति विक्रमजोत के चुनाव में सिद्वांत कुमार सिंह पुत्र अरविंद कुमार सिंह अपना भूजोत सीएलए जालसाजी करके अपने कृषक कोड संख्या 6723/43 गलत राजस्व अभिलेख के सहारे गन्ना समिति के साल 2018 में सदस्य बन गए। बताया किइस साजिश में डीसीओ और पूर्व चेयरमैन लिप्त है। कहा कि ईआरपी वेबसाइड पर सिद्वांत सिंह पुत्र अरविंद सिंह के नाम कुल भूजोत 0.234 एअर भूमि दर्ज है। लिखा कि राजस्व ग्राम दुबखरा निर्वहन की खतौनी में गाटा संख्या 296 ग्राम सभा की आबादी के रुप में दर्ज है। लिखा कि ग्राम दुभरा निर्वहन का खसरा/गाटा संख्या 2996 राजस्व अभिलेख के कम्पयूटर में डाटा उपलब्ध नहीं है। यह गाटा काल्पनिक है। लिखा कि पूर्व चेयरमैन एवं अरविंद सिंह की पत्नी मंजू सिंह के पुत्र सिद्वांत कुमार सिंह अपने कोड संख्या 6723/43 पर ग्राम के आबादी की जमीन की गाटा संख्या 286 फीड कराकर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके मेंबर/सदस्य बन गए। लिखा गया कि इनके द्वारा विभागीय नियमों के साथ जालसाजी की गई। मुख्यमंत्री से गन्ना समिति विक्रमजोत को धोखेबाजों से बचाने की अपील की गई। सबसे बड़ा सवाल यह है, कि सरकारी वेबसाइड पर कैसे हेराफेरी की गई, इसका मतलब यह है, कि जालसाजी करने वालों का जाल जिला गन्ना अधिकारी कार्यालय तक फैला हुआ है। इसी लिए डीसीओ के खिलाफ भी कार्रवाई करने की अपील की गई है। इससे पहले भी मीडिया इस बारे में सवाल खड़ा कर चुकी है। चूंकि जालसाजों का जाल इस तरह फैला हुआ है, कि वहां तक पहुंच पाना बिना भाजपा के लोगों की रजामंदी से मुमकिन नहीं है। सवालों के घेरे में तो सबसे भाजपा के लोग ही आ रहे है।

गरीबों की सेवा करना है, तो अस्पताल खोलिए:देवेंद्र प्रताप सिंह

बस्ती। सोमवार को कटेश्वर पार्क स्थित मोहल्ला जयपुरवा में 'जीवन दायिनी हॉस्पिटल' नामक अस्पताल का उद्घाटन एमएलसी देवेन्द्र प्रताप सिंह और पूर्व विधायक संजय प्रताप जायसवाल ने किया।। उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि देवेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि अस्पताल खोलना पुनीत कार्य है। अस्पताल खुलने से आने वाले लोगों का उपचार भी होगा। अस्पताल एक आवश्यक स्वास्थ्य सेवा सुविधा है जो जरूरतमंद मरीजों को विशेष चिकित्सा देखभाल, नर्सिंग देखभाल और आवश्यक चिकित्सा आपूर्ति प्रदान करती है । आमतौर पर एक आपातकालीन कक्ष से सुसज्जित होता है जो किसी भी प्रकार की चिकित्सा आपात स्थिति या दुर्घटना को संभाल सकता है। विशिष्ठ अतिथि पूर्व विधायक संजय प्रताप जायसवाल ने कहा कि अस्पताल मानवता की सेवा करते हैं और किसी भी समाज के सामाजिक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रोगी को स्वस्थ बनाने के लिए विभिन्न बीमारियों से निपटने के लिए अस्पताल अपरिहार्य आवश्यकता है। एमडी चन्द्रेश प्रताप सिंह और अस्पताल संचालक नजीर हुसैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुये बताया कि जीवन दायिनी हॉस्पिटल का उद्देश्य मरीजों को न्यूनतम धनराशि में बेहतर स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराना है। मरीजों का स्वस्थ होना उनकी प्राथमिकता होगी। इसके लिये अस्पताल में आवश्यक सुविधायें उपलब्ध हैं। उद्घाटन अवसर पर मुख्य रूप से एमएलसी प्रतिनिधि हरीश सिंह, एमडी चन्द्रेश प्रताप सिंह, एम अंसारी, अजय कुमार, जफर, सुनील मिश्रा, अमन सिंह आदि शामिल रहे।

साहब 'कुदरहा' ब्लॉक को 'बीडीओ' के 'भ्रष्टाचार' से बचा 'लीजिए'!

- -ग्राम पंचायत कोप के प्रेम प्रकाष ने प्रधान और बीडीओ पर लगाया गंभीर आरोप
- -एक सेमी. मिटटी नहीं डाली, और बीडीओ साहब जेई पर भुगतान करने को दबाव बना रहें
- -280 मस्टरोल की हाजरी लगाया, और काम किए दस मजदूर
- -बीडीओ जांच करने नहीं बल्कि गांव वालों के बीच झगड़ा करवाने गए थे
- -सीएम, सीएम सहित 20 षिकायती पत्र दिया, लेकिन बीडीओ के चलते नहीं हो रही कोई कार्रवाई और ना भ्रष्टाचार रुक रहा

बस्ती।...जब गांव वाले डीएम से कहने लगे कि साहब कुदरहा ब्लॉक को बीडीओ और प्रधानों के भ्रष्टाचार से बचा लीजिए वरना ब्लॉक बर्बाद हो जाएगा, तब समझ लेना चाहिए, कि वाकई ब्लॉक को बर्बाद होने से कोई नहीं बचा सकता है। यह हालत सिर्फ कुदरहा की नहीं हैं, कमोवेष सभी ब्लॉकों की है। कोई ऐसा ब्लॉक नहीं जिसके बीडीओ के चुंगल से ब्लॉक ना छटपटा रहा हो। जिस तरह खुले आम बीडीओ साहब लोग बखरा लेने लगे हैं, उससे पूरी व्यवस्था पर ही सवाल उठने लगे। रही बात प्रमुखों की तो लगमता है, कि अधिकांष लोगों ने बीडीओ के आगे सरेंडर कर दिया है। सरेंडर क्यों किया होगा, यह लिखने की नहीं बल्कि समझने की बात है। रही बात कुदरहा ब्लॉक की। यह ब्लॉक कभी षांत नहीं रहा। इस ब्लॉक को अषांत घोषित करने में बीडीओ संजय नायक का बहुत बड़ा हाथ है।

ग्राम पंचायत कोप के प्रेम प्रकाष ने जिस तरह डीएम से ब्लॉक को बीडीओ से बचाने की मांग की है, उससे पता चलता है, ब्लॉक कितना अषांत है। षिकायतकर्त्ता सीएम और सीएम से लेकर लगभग दो दर्जन भ्रष्टाचार को लेकर षिकायत कर चुका हैं, लेकिन जैसे ही जांच ब्लॉक पर आती है, षिकायत निक्षेपित हो जाता है। बिना जांच और गांव में गए कैसे निक्षेपित हो जाता है, यह बात आज तक प्रेम प्रकाष को पता नहीं चला। कहते हैं, कि यूंही नहीं इस क्षेत्र से भाजपा के विधायक और सांसद हारे है। डीएम से मिलकर षिकायतकर्त्ता ने बीडीओ पर भ्रष्टाचार में लिप्त रहने का आरोप लगाया। कहा कि बीडीओ के द्वारा अपनी जिम्मेदारियों का निवर्हन जानबूझकर नहीं किया जा रहा है। क्यों कि यह खुद भ्रष्टाचार में डुबे हुएं है। यह धन का बंदरबांट कर रहे है। कहा कि जांच के दौरान प्रार्थी को अपमानित और बेइज्जत कराने की नीयत से बीडीओ साहब आंगनबाड़ी कार्यकर्त्ती पुष्पा पत्नी हरिनारायन, सफाई कर्मी पंकज पुत्र हरिनारायन, प्रधान जानकी देवी, सुनील, हृदयराम एवं समूह की महिलाएं षुक्लावती सहित अन्य लोगों को मौके पर बुलाया। जबकि यह लोग मनरेगा में काम भी नहीं किए थे, यह लोग बीडीओ के सामने ही उसके साथ गाली गलौज किया और जान से मारने की धमकी भी दिलवाया। कहा कि जब उसने जांच का वीडियो बनाने का प्रयास किया तो उसे डांट डपटकर भगा दिया गया। बीडीओ ने स्वंय वीडियो बनाया। बताया कि कागजों में पिचरोड से नरैनी तालाब तक मिटटी का कार्य दूरी 150 मीटर हो रहा है। जिस पर प्रति दिन 120 फर्जी मस्टरोल निकाले जा रहे है। यह फर्जी कार्य चार नवंबर से 18 नवंबर तक दिखाया गया। प्रति दिन 60 मजदूरों की हाजरी भी लगाई जा रही है। इसी तरह कागजों में दूसरा कार्य श्राम भरत के खेत से रामकेष के खेत तक दूरी 100 मीटर यह कार्य नौ नवंबर तक चला, जिस पर 60 मजदूरों की फर्जी हाजरी लगाई गई। बताया कि उसके द्वारा बराबर वीडियोग्राफी की गई है। कहा कि पिच रोड से लरैनी ताल की सड़क को टैक्टर एवं रोटावेटर से जुताई की गई।, जिसमें रोटावेटर के साइड तवा से पल्टी हुई मिटटी स्पष्ट दिखाई दे रही हैं, लेकिन जब इसे बीडीओ को दिखाया गया तो उन्होंने देखा ही नहीं है। इस सड़क की जांच बीडीओ ने 21 को किया, जबकि सड़क 18 नवंबर को ही पूरा दिखाया गया। जेई कहते हैं, कि बीडीओ साहब उन पर फर्जी भुगतान कराने का दबाव बना रहे है। षिकायतकर्त्ता ने जांच के लिए उच्च स्तरीय कमेटी बनाने और बीडीओ, सचिव एवं प्रधान के विरुद्व एफआईआर दर्ज करने की मांग की है।बीएसए के खिलाफ रोज मुर्दाबाद के नारे लगेंगे, तब फिर इनके निलंबन और तबादले की मांग भी उठेगी। तब हो सकता हैं, कि अन्य की तरह इस बीएसए को भी कहीं अपमानित और रोकर ना जाना पड़े। अपने कार्यालय को बीएसए को राजनीति का अखाड़ा बनाने से रोकना पड़ेगा। वरना, नित्य बीएसए और इनका गैंग मीडिया की सुर्खियों में रहेगा।

कांग्रेसियों ने रखा सांकेतिक उपवास, किया संभल हिंसा का विरोध

- -संभल की घटना प्रशासनिक चूक का नतीजा:ज्ञानेन्द्र पाण्डेय
- -हर मस्जिद को मन्दिर कहकर नया विवाद खड़ा करना दुर्भाग्यपूर्ण

बस्ती। संभल में जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान हुई हिंसा में पांच युवकों की गोली लगने से हुई मौत को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी की ओर से जिलाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र पाण्डेय 'ज्ञानू' की अध्यक्षता में बीडीए परिसर में स्थित महात्मा गांधी की प्रति के समक्ष सांकेतिक उपवास रखा गया। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा संभल में मन्दिर के नाम पर जो कुछ हुआ वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। हर मंदिर को मस्जिद कहना, हर जगह एक नया विवाद खड़ा करना देश व समाज के लिये घातक है, इसके दुष्परिणाम सभी समुदायों को भोगने होंगे। उन्होने कहा अभी बहराइच का घाव भरा नही कि संभल को दंगे की आग में झोंक दिया गया। आनन फानन में याचिका, याचिका की मंजूरी और तत्काल सर्वे, ये सब एक साजिश का हिस्सा लगता है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा उत्तर प्रदेश में जो नफरती माहौल और दंगों की पृष्ठभूमि तैयार हो रही है उसमे पूरा देश झुलसेगा, इसलिये इसका विकराल रूप सामने आने से पहले महामहिम राष्ट्रपति को ठोस पहल करनी होगी, वरना काफी देर हो जायेगी और यूपी दूसरा मणिपुर बन जायेगा। उन्होने संभल में हुई हिंसा प्रशासनिक मशीनरी के नाकामी की घोर निंदा की।

प्रवक्ता मो. रफीक खां ने कहा मस्जिदों को टारगेट किया जा रहा है। मौजूदा सरकार को न्यायिक व्यवस्था पर भरोसा नही है इसलिये पुलिस को आगे करके दंगों को अंजाम दिया जा रहा है। उपवास के दौरान अनिल कुमार भारती, रामभवन शुक्ल, डीएन शास्त्री, लक्ष्मी यादव, सुनील पाण्डे, दीपेन्द्र सिंह, शिवाकान्त तिवारी, शौकत अली नन्हू, डा. मारूफ अली, अनूप पाठक, शीतला शुक्ल, सद्दाम हुसेन, अशोक श्रीवास्तव, अलीम अख्तर, मो. अशरफ अली, उमाशंकर त्रिपाठी, सुधीर यादव, प्रशान्त पाठक, आशुतोष पाण्डेय, कमलाशंकर चौधरी, करीम अहमद, ओमप्रकाश पाण्डेय, अतीउल्लाह सिद्धीकी, अवधेश सिंह, रामधीरज चौधरी, अकरम अंसारी, आनंद निषाद, गिरजेश पाल, फिरोज खान, अशोक पाण्डेय, अनूप यादव, रविप्रताप चौधरी, दूधनाथ पटेल आदि मौजूद रहे।

.आखिर 'खुल' ही गया 'पिता-पुत्र' की 'जालसाजी' का 'पोल'!

- ❖-इसके लिए दोषी अरविंद सिंह और सिद्वांत सिंह को नहीं बल्कि भाजपा के जिम्मेदारों को माना जा रहा, जिन्होंने रातो-रात जिला कार्य समिति का सदस्य बना दिया
- ❖-मीडिया चुनाव से पहले ही कहती आ रही है, कि गन्ना समिति विक्रमजोत के चेयरमैन के चुनाव में फर्जीवाड़ा हुआ, बलराम सिंह जैसे पुराने भाजपा नेता तक ने शिकायत किया, लेकिन किसी ने नहीं सुना
- ❖-अगर शिकायतों का निस्तारण कर दिया होता तो आज ना तो चेयरमैन की कुर्सी खतरे में पड़ती और ना अरविंद सिंह की इज्जत ही दांव पर लगती
- ❖-जिस तरह सरकारी जमीन को अपनी जमीन बताकर सिद्वांत सिंह को किसान बनाकर उन्हें चेयरमैन बनाया गया, उससे भाजपा और फर्जीवाड़ा करने वाले दोनों की पोल खुल गई
- ❖-अगर कहीं गन्ना पर्यवेक्षक अर्जुन प्रसाद गौड़ की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा लिख दिया तो रही सही इज्जत भी अरविंद सिंह और उनके परिवार की चली जाएगी
- ❖-मलाई तो भाजपा के लोगों ने खूब खाया, अब बदनामी का दंश भी झेलने को तैयार रहें

बस्ती।...प्रशासन अगर चुनाव के दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेता बलराम सिंह की शिकायत का निस्तारण कर दिया होता तो आज अरविंद सिंह के बेटे सिद्वांत सिंह की चेयरमैनी और इज्जत दांव पर नहीं लगती। शिकायतकर्त्ता बलराम सिंह चिल्लाते रह गए, लेकिन उनकी ना तो प्रषासन और ना पार्टी के जिम्मेदारों ने ही सुनी। अगर सुनी होती तो मामला थाने तक नहीं पहुंचता। जिस तरह भाजपा के जिम्मेदारों ने रातो-रात ऐसे अरविंद कुमार सिंह के बेटे सिद्वांत कुमार सिंह को जिला कार्यसमिति का सदस्य बना दिया, जो एक दिन भी भाजपा कार्यालय ना गया हो, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है, कि चेयरमैनी बनाने में बहुत बड़ा खेल हुआ। जिस तरह सरकारी जमीन को अपनी जमीन बताकर सिद्वांत सिंह को किसान बनाकर उन्हें चेयरमैन की कुर्सी पर बैठाया, उससे भाजपा और फर्जीवाड़ा करने वाले बाप-पुत्र सभी की पोल खुल गई। अगर कहीं गन्ना पर्यवेक्षक अर्जुन प्रसाद गौड़ की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा लिख दिया तो भाजपा और अरविंद सिंह सहित उनके परिवार की रही सही इज्जत भी चली जाएगी। वैसे भाजपा के लोगों ने तो खूब खाया, अब बदनामी का दंष भी झेलने को तैयार रहें। अगर कहीं विक्रमजोत की चेयरमैनी चली गई, तो अरविंद सिंह की कम और भाजपा की अधिक फजीहत होगी। सहकारी गन्ना समिति विक्रमजोत उन लोगों के लिए एक सबक हैं, जो लोग पार्टी के साथ मिलकर फर्जीवाड़ा करते हैं, और कुर्सी हासिल करते है। सिद्वांत कुमार सिंह का सटटा बंद होना और इनके खिलाफ तहरीर देना यह साबित करता है, कि कुर्सी हासिल करने के लिए जितना फर्जीवाड़ा हो सकता था, उतना किया, और जब यह पता चला कि अब तो कुर्सी जाने वाली है, तो मारपीट कर दिया/करवा दिया। यह हम नहीं बल्कि गन्ना पर्यवेक्षक अर्जुन प्रसाद गौड़ की ओर से दी गई तहरीर और वह जांच रिपोर्ट कह रही है, जिसमें बाग की जमीन को भूजोत में फीड कराने की साजिष की गई। भले ही अरविंद सिंह यह कहते फिरे कि शिकायतकर्त्ता का पता नहीं, से काम नहीं चलने वाला है, महत्वपूर्ण यह नहीं कि षिकायतकर्त्ता है, कि नहीं और किसने किया, बल्कि महत्वपूर्ण यह हैं, कि षिकायत सही है, या फिर गलत। इस फर्जीवाड़े में सिर्फ चेयरमैन सिद्वांत कुमार सिंह का ही सटटा नहीं बंद हुआ बल्कि कुलदीप सिंह पुत्र अवध राम अवध सिंह ने भी बाग की जमीन को भूजोत में फीड कराकर फर्जीवाड़ा किया। इसी फर्जीवाड़े पर यह निर्विरोध डायरेक्टर चुने गए, चेयरमैन की कुर्सी की तरह इनकी भी डायरेक्टरी खतरे में हैं, फ्राड के केस में दोनों के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज हो सकता है। एसओ छावनी ने बताया कि तहरीर मिल गई, जांच विक्रमजोत के चौकी इंचार्ज को दिया गया है, अभी दोनों पक्षों की ओर से बयान नहीं दर्ज हुआ।

अब हम आपको उस तहरीर की ओर ले चलते हैं, जिसे गन्ना पर्यवेक्षक अर्जुन प्रसाद गौड़ ने फर्जीवाड़े का पोल खोलते हुए डायरेक्टर कुलदीप सिंह और पूर्व चेयरमैन एवं वर्तमान चेयरमैन के पिता अरविंद कुमार सिंह के खिलाफ मारपीट करने एवं जांच को प्रभावित करने के आरोप में मुकदमा दर्ज करने की अपील एसओ छावनी से की है। गवाह के रुप में बालेंद्र सिंह, लिपिक षैलेंद्र सिंह, रमाशंकर सिंह, सौरभ कुमार, ऋषभ तिवारी समायिक लिपिक, प्रवीण कुमार एवं गन्ना पर्यवेक्षक अनूप पांडेय का नाम और मोबाइल नंबर एवं हस्ताक्षर भी है। घटना 20 नवंबर 24 का बताया गया। कहा गया कि वह गन्ना पर्यवेक्षक के रुप में विक्रमजोत में तैनात है। कहा कि बोर्ड की बैठक थी, जिसमें ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक उपेंद्र सिंह एवं गन्ना विकास निरीक्षक/सचिव देवस्वरुप षुक्ल के द्वारा मुझे वारिष सदस्य जीवानरायनपुर के मामले में जानकारी के लिए बुलाया था। अभी मैं अपने अधिकारियों को जानकारी दे ही रहा था, कि जभी कुलदीप सिंह पुत्र राम अवध सिंह ने मां-बहन की गंदी-गंदी गाली देने लगे एवं मारने की धमकी देने लगे। कहा कि गाली और मारने की धमकी अरविंद सिंह के ईशारे पर दिलाया गया। इस पर मेने अधिकारियों ने अरविंद सिंह से कहा कि क्यों मेरे पर्यवेक्षक को गाली दिलवा रहें है। क्यों नहीं रोक रहे है। इस पर सभी अधिकारी बैठक से उठ गए और एफआईआर दर्ज कराने को कहा। इसके बाद मैं अधिकारियों के साथ नांदेकुंवा-भेलमापुर क्रयकेंद्र की जांच करने चला गया। जांच रिपोर्ट और खतौनी की नकल के साथ तहरीर देते हुए कहा गया कि कुलदीप सिंह बाग की जमीन लगाकर-बंजर जमीन लगाकर 1996 में गन्ना समिति में धोखाधड़ी करके सदस्य बने थे, साल 2024 में यह निर्विरोध डायरेक्टर चुने गए। इसकी शिकायत कृष्ण बहादुर सिंह नामक व्यक्ति के द्वारा सीएम पोर्टल पर की गई। जब इसकी मेरे द्वारा जांच की गई, तो यह भूमिहीन पाए गए और नियमानुसार कोई भी भूमिहीन किसान नहीं हो सकता और ना वह डायरेक्टर ही बन सकता है। जिस पर इनका सटटा बंद कर दिया गया। कहा कि जांच के दौरान कुलदीप और अरविंद के द्वारा नाजायज दबाव बनाया गया। लिखा कि वर्तमान में अरविंद कुमार सिंह के पुत्र सिद्वांत कुमार सिंह चेयरमैन निर्वाचित है। षासन स्तर पर सिद्वांत सिंह खिलाफ जांच मिली। लिखा कि चेयरमैन के द्वारा गन्ना विभाग के वेबसाइड ईआरपी पर ग्राम दुभरा निर्वहन में राजस्व गाटा संख्या 296 एवं 2996 ख अपने कोड संख्या 6723/43 पर भूजोत फीड कराया गया। जबकि गाटा संख्या 296 आबादी भूमि होने के कारण चेयरमैन का भी सटटा बंद कर दिया गया। बताया कि चेयरमैन का पद जाने के डर गाली गलौच की घटना को सोची समझी रणनीति के तहत अंजाम दिया गया। इसकी प्रति डीसीओ, डीएम, क्षेत्रीय विधायक और मीडिया को भी उपलब्ध कराया गया।